कार्रवाई का संदेश

पुलवामा त्रासदी के 12 दिन बाद पाकिस्तान के बालाकोट में स्थित जैशे-मोहम्मद के बड़े अड्डे तथा पाक-अधिकृत कश्मीर में दो अन्य आतंकी ठिकानों को तबाह कर भारत ने जता दिया है कि आतंकवाद के खिलाफ कोई भी कार्रवाई करने में वह हिचकेगा नहीं. उरी हमले के बाद पाक-अधिकृत क्षेत्र में नियंत्रण रेखा के निकट स्थित अड्डों को निशाना बनाया गया था. लेकिन बालाकोट पर लड़ाकू जहाजों ने भारी मात्रा में बमबारी कर हमारी आतंकवाद-निरोधक सुरक्षा नीति में नया आयाम जोड़ा है. इसका संदेश यही है कि यदि पाकिस्तान-समर्थित गिरोह भारत को नुकसान पहुंचायेंगे, तो भारत नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार जाकर भी उन्हें बर्बाद कर सकता है. केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली ने उचित ही कहा है कि कई बरसों से लगातार हो रही आतंकी वारदातों के बावजूद सीमा-पार बैठे गिरोहों और उनके सरगनाओं को निशाना नहीं बना पाना भारत के लिए बेचैनी का कारण थी. अक्सर यह सवाल सरकार, सेना और देश के सामने उठते रहते थे कि जैसा अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन के साथ किया, वैसा हम मसूद अजहर, हाफिज सईद और सलाहुद्दीन जैसे मानवता के दुश्मनों के साथ क्यों नहीं कर सकते हैं. तमाम चेतावनियों के बाद भी पाकिस्तान के अलगाववाद, आतंकवाद और चरमपंथ को पालने-पोसने की नीति पर चलते रहने तथा अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा उसके ऊपर समुचित दबाव बना पाने में कामयाबी नहीं मिलने के कारण ऐसे सवाल उठना वाजिब ही था. परंतु, पाकिस्तान की हेठी ने भारत के सब्र का बांध तोड़ दिया. साल 1971 के बाद पहली बार है, जब वायु सेना के युद्धकों ने पाकिस्तानी सीमा में प्रवेश किया है. आतंकी अड्डे पर करीब हजार किलो के लेजर-निर्देशित बमों को गिराना और कार्रवाई में 12 युद्धकों का भाग लेना बालाकोट हमले की गंभीरता को इंगित करते हैं. पाकिस्तानी सुरक्षा तंत्र के चौकन्ना रहने के बाद भी इरादे को अंजाम देकर वापस आना दुरुस्त तैयारी का सबूत है. इसमें कोई दो राय नहीं है कि परमाणु क्षमता से लैस दो देशों के बीच ऐसे किसी हमले में लड़ाकू विमानों के हिस्सा लेने और नियंत्रण रेखा को पार कर हमले करने से तनातनी के बड़ी झड़प या युद्ध में तब्दील होने की आशंका रहती है. लेकिन इस तरह की कार्रवाई का फैसला लेना मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति को दर्शाता है. पाकिस्तान ने 2003 में नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा पर लागू युद्धविराम का निरंतर उल्लंघन किया है. इसके साथ आतंकियों को घुसपैठ के जरिये कश्मीर भेजने तथा अलगाववादी भावनाएं भड़काने की कोशिशें भी जारी रही हैं. पाकिस्तानी सरकार और सेना का आतंकी गिरोहों से सीधे संबंध होने के अनगिनत प्रमाण हैं. उसे यह एहसास अच्छी तरह से हो जाना चाहिए कि आतंकियों को निशाना बनाने की कोशिश में भारत किसी हद या सरहद की परवाह अब नहीं करेगा.

पाकिस्तान को यह एहसास अच्छी तरह से हो जाना चाहिए कि आतंकियों को निशाना बनाने की कोशिश में भारत किसी हद या सरहद की परवाह अब नहीं करेगा .

करारा जवाब देने को तैयार

प्रकाश सिंह
पूर्व डीजीपी, बीएसएफ
delhi@prabhatkhabar.in

एक अरसे तक जब भी पाकिस्तान की तरफ से आतंकवादी हमले होते थे, चाहे वह 26/11 मुंबई का हमला हो या फिर संसद पर हुआ हमला हो, तब भारत की तरफ से प्रोटेस्ट होता था, देशभर में सख्त बयान दिये जाते थे और कूटनीतिक एवं राजनीतिक स्तर पर यह कोशिश होती थी कि किस तरह से पाकिस्तान को दबाया जाये. उसके बाद साल 2016 में भारत एक कदम आगे बढ़ा और उरी हमले के बाद भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके पाकिस्तान की सीमा में घुसकर आतंकियों के लांच पैड को बरबाद कर दिया. इस बार पुलवामा हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने यह कह दिया था कि सेना को खुली छूट है. उसी का नतीजा इस बार देखने को मिला और वायुसेना ने सीमा पार जाकर हमला कर दिया, जो कि निश्चित रूप से एक एयर स्ट्राइक थी. यहां यह बात जरूर है कि सेना ने यह सब बहुत सोच-समझकर किया होगा कि इसके जवाब में पाकिस्तान भी कोई कदम उठा सकता है. लेकिन हमारी सेना उससे लड़ने में सक्षम है.

हालांकि, अब दोनों तरफ से जवाबी कार्रवाइयां देखने को मिल रही है और भारत ने कल पाकिस्तान के एफ-16 विमान को मार गिराया है. कल हुई इन कार्रवाइयों को देखकर यही लगता है कि पाकिस्तान अब भी नहीं थम रहा है और उसने अपनी जवाबी कार्रवाई को तेज कर दिया है. अब आगे क्या होगा, इस बारे में अभी कुछ ठोस कहना मुश्किल है, लेकिन हमारी सेना हर हाल में मुंहतोड़ जवाब देगी ही देगी.

एयर स्ट्राइक के बाद मेरा अनुमान था कि पाकिस्तान यह सोच रहा था कि पुलवामा के बाद भारत की तरफ से फिर कोई सर्जिकल स्ट्राइक होगी और भारतीय सेना के जवान उसके किसी क्षेत्र में जाकर जमीनी हमला करेंगे. लेकिन, पाकिस्तान ने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि यह सर्जिकल स्ट्राइक जमीनी नहीं होगी, बल्कि हवाई यानी एयर स्ट्राइक होगी और अंतरराष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन करके होगी. क्योंकि पाकिस्तान भी यही मानकर चलता रहा है कि भारत ने ऐसा कभी किया नहीं है. यहां तक कि कारगिल के समय भी जब भारतीय सेनाओं के पास अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करने का मौका था, तब भी भारत ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उस समय अमेरिकी दबाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसकी अनुमति नहीं दी थी. इसी बात के मद्देनजर पाकिस्तान कुछ निश्चिंत था.

ऐसा पहली बार हुआ है कि आतंकी हमले के जवाब में भारत की तरफ से एयर स्ट्राइक की गयी है, जिसका पाकिस्तान को बिल्कुल भी अनुमान नहीं था. इससे साफ है कि भारत सरकार की यह एक नयी नीति की शुरुआत है और भारत में एक नये तरह का शासन तंत्र विकसित हो रहा है. यह एक कड़ा संदेश है पाकिस्तान को कि भारत पर हमला करके वह यह न सोचे कि भारत सिर्फ निंदा करके रह जायेगा. अब भारत हर हमले पर सख्त कार्रवाई करेगा. हालांकि, पाकिस्तान भी अब जवाबी कार्रवाई कर रहा है, जिससे युद्ध की संभावना बलवती हो जाती है. हम किसी भी तरह पीछे हटनेवालों में नहीं हैं, लेकिन युद्ध न ही हो, तो बेहतर है, क्योंकि किसी भी युद्ध के परिणाम बहुत खतरनाक होते हैं.

कोई भी देश यह नहीं चाहता कि युद्ध हो, लेकिन पाकिस्तान ने ऐसी स्थितियां पैदा कर दी हैं कि हमें न चाहते हुए भी उसको करारा जवाब देना पड़ रहा है .

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें, तो हमारी इस कार्रवाई को कूटनीति के स्तर पर भी सफलता मिली और कुछ चीजें ऐसी हुईं, जिसकी फिलहाल तक उम्मीद नहीं थी. फिलहाल तक पाकिस्तान पर कोई बड़ा अंतरराष्ट्रीय दबाव नहीं आया है, लेकिन यह उम्मीद की जानी चाहिए कि जल्दी ही अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ेगा और पाकिस्तान को अपने यहां पल रहे आतंकवाद की वजह से डांट सुननी पड़ सकती है. कई बड़े देशों ने पुलवामा हमले की निंदा की थी, लेकिन कोई दबाव नहीं बनाया था. अब उम्मीद है कि वह दबाव बने.

हालांकि, भारत का यह कदम एक खतरनाक और रिस्की कदम था, क्योंकि उस रात अगर हमारा एक जहाज भी पाकिस्तान मार गिराता, तो जीत उसके खाते में चली जाती. वह साफ कहता कि हमें तो कोई नुकसान नहीं हुआ, बल्कि हमने भारत के जहाज को मार गिराकर भारत का काफी नुकसान कर दिया. इस ऐतबार से एयरफोर्स की तारीफ करनी होगी कि उन्होंने बहुत ही खूबसूरती से पाकिस्तान की सीमा में घुसकर हमला किया और फिर वापस भी चले आये. यह एक बड़ी बहादुरी और होशियारी भरी चाल थी. लेकिन उसकी जवाबी कार्रवाई और फिर हमारे जवाब में हमारे मिग-21 विमान को उसने मार गिराया है, यह हमारे लिए बहुत दुखद है. ऐसे में, अगर जवाबी कार्रवाइयों का सिलसिला आगे और बढ़ता है, तो स्थिति बहुत गंभीर हो सकती है.

हमारी सेना ने रिस्क लेकर यह कदम उठाया है. इसलिए इस कार्रवाई का हमारे लिए बहुत महत्व है. यहां यह बात समझनेवाली है कि अब से पहले जब भी पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई की बात आती थी, तो लोग कहते थे कि पाकिस्तान एक परमाणु हथियारों से संपन्न देश है, इसलिए हमें रिस्क नहीं लेना चाहिए. लेकिन, अब यह धारणा टूट गयी है. हालांकि, इस धारणा के टूटने के अपने जोखिम भी हैं और हार-जीत से ज्यादा जान-माल के नुकसान की चिंता बड़ी है. कोई भी देश यह नहीं चाहता कि युद्ध हो, लेकिन पाकिस्तान ने ऐसी स्थितियां पैदा कर दी हैं कि हमें न चाहते हुए भी उसको करारा जवाब देना पड़ रहा है.

पाकिस्तान एक परमाणु हथियारों से संपन्न देश है, इसलिए यह आशंका रहती ही है कि अगर आर-पार युद्ध की हालत बनती है, तो वह इसका इस्तेमाल कर सकता है. लेकिन, यहां एक बात तय है, अगर पाकिस्तान परमाणु हमला करता है, तो भारत भी उसका मुंहतोड़ जवाब देगा. इससे पाकिस्तान को ही डरना चाहिए, क्योंकि हमले के बाद भी भारत उबर जायेगा, लेकिन अगर हमने परमाणु हमला कर दिया, तो पाकिस्तान नक्शे से मिट जायेगा. भारत में कुछ बरबादी हो सकती है, लेकिन पाकिस्तान का अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा. अब परमाणु हमले की धमकी से भारत ऊपर उठ गया है. हालांकि, किसी भी तरफ से परमाणु हमला न ही हो, तो बेहतर है, क्योंकि इसके परिणाम बहुत ही घातक हैं. एक देश की पीढ़ियां ही नहीं, बल्कि कई पड़ोसी देशों तक इसका असर होता है. फिर भी हम चिंतित नहीं हैं, क्योंकि हमारी सेना पूरी तरह से तैयार है.

(बातचीत : देवेश)

पाकिस्तान को किया अलग-थलग

सना हाशमी
रणनीतिक विश्लेषक
delhi@prabhatkhabar.in

भारत ने पाकिस्तान की सीमा में घुसकर एयर स्ट्राइक करके अपना दमखम दिखा दिया है. आतंकवाद के खिलाफ भारत की सेना और सरकार ने जीरो टॉलरेंस की नीति अपनायी है और मोदी सरकार अब आतंकवाद से लड़ने के अपने वादे को पूरा करने की कोशिश की तरफ एक कदम आगे बढ़ चली है. इस एयर स्ट्राइक का सबसे बेहतरीन पहलू यह है कि यह बात साबित हो गयी है कि भारतीय वायुसेना विश्व की बेहतरीन सेनाओ में एक है और वह अपने देश पर होनेवाले हमलों का करारा जवाब देने के लिए पूरी तरह सक्षम है. भारत ने आतंकियों के ठिकानों पर अचानक हमले करके यह बात साबित कर दिया है कि भारत न आतंकियों से डरता है, न ही पाकिस्तान की धमकियों से.

सीमा पार से हम लगातार हमले झेलते आ रहे हैं, इस बात को पूरी दुनिया अपनी आंखों से देख रही थी और अब भी देख रही है. इसलिए पुलवामा हमले के बाद यह जरूरी हो गया था कि भारत इसका सतर्कता के साथ उचित जवाब दे. पिछले तीन दशकों से पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध एक तरह से अघोषित युद्ध छेड़ रखा था, जो किसी न किसी रूप में अब भी जारी है. इस अघोषित युद्ध में पाकिस्तान इंटेलिजेंस एजेंसी आईएसआई और पाकिस्तान में छुपे बैठे आतंकवादियों ने भारत को हर तरह से चोट पहुंचायी है. सीमा पर अक्सर हम उसके छद्म युद्ध को देखते रहे हैं. हम अपनी सहनशीलता के चलते उनको चेतावनी देकर ठहर जाया करते थे. लेकिन उरी घटना के बाद हुए पुलवामा हमले ने हमारी सहनशीलता को तोड़ दिया. इसलिए भारत ने यह बड़ा कदम उठाया है. यह कदम बहुत मुकम्मल है और हमें इसी तरह के मुंहतोड़ जवाब देने के लिए आगे भी तैयार रहना होगा. क्योंकि, पाकिस्तानी वायुसेना के नौशेरा सेक्टर में घुसने का मतलब साफ है कि पाकिस्तान हमको उकसा रहा है. भारतीय सेना ऐसे उकसावे में नहीं आती, बल्कि अपनी सही रणनीतिक योजना के साथ उचित समय पर सैन्य कार्रवाइयों को अंजाम देती है.

एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान के बचाव में कोई देश नहीं आया, वह अब अलग-थलग सा पड़ गया है. चीन हमेशा पाकिस्तान का साथ देता है, लेकिन उसने भी पाकिस्तान का नाम न लेते हुए कहा कि आतंकवाद मानवजाति का दुश्मन है. यही नहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी पुलवामा हमले की निंदा करते हुए यह कहा था कि भारत कुछ बड़ा करेगा. इसका मतलब साफ है कि कोई भी देश पाकिस्तान का साथ तब तक नहीं देगा, जब तक कि वह आतंकवाद को पनाह देना बंद नहीं कर देता.

पाकिस्तान में घबराहट है और दरअसल, पाकिस्तान को पता है कि उसकी कारगुजारियां दुनिया के सामने आनेवाली हैं . और भारत अब जवाबी कार्रवाई को तैयार है, इसलिए उसकी घबराहट तो लाजमी है .

भारत ने साल 2008 में मुंबई में हुए 26/11 के हमले के बाद से ही भारत के विरुद्ध आतंकवाद को पनाह देने की पाकिस्तानी गतिविधियों को दुनिया के सामने उजागर करने की कोशिश की है. और सकारात्मक बात यह है कि हमें इसमें सफलता भी मिली है. हमें जरूरत थी कि राजनय के साथ सैन्य प्रतिकार भी किया जाये. इसलिए प्रधानमंत्री मोदी ने हिम्मत दिखायी है.

यह बात सच है कि आतंकवाद को इतनी आसानी से खत्म नहीं किया जा सकता है, लेकिन एयर स्ट्राइक जैसी कार्रवाइयों से सेना का मनोबल बढ़ता है और देश के भीतर भी अपनी आंतरिक सुरक्षा को लेकर निश्चिंतता बढ़ती है. एयर स्ट्राइक हमारी रणनीतिक जीत मानी जायेगी, जिसने पाकिस्तान को अलग-थलग करने में एक बड़ी भूमिका निभायी है. और शायद इसी वजह से पाकिस्तान की वायुसेना, उसके विदेश मंत्रालय और पाक प्रधानमंत्री इमरान खान के बयानों में अच्छा-खासा अंतर भी दिख रहा है. जाहिर है, अलग-थलग पड़ने से पाकिस्तान की घबराहट भी साफ झलकती है, इसलिए वह अब सैन्य कार्रवाइयों को अंजाम दे रहा है. दरअसल, पाकिस्तान को पता है कि उसकी कारगुजारियां दुनिया के सामने आनेवाली हैं. और भारत जवाबी कार्रवाई को तैयार है, इसलिए उसकी घबराहट तो लाजमी है.

आंतरिक सुरक्षा के नजरिये से सरकार ने बड़ा कदम उठाया है. हालांकि, आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे पर हमें और भी ज्यादा चौकस रहना होगा, क्योंकि यह कदम वायुसेना का था. देश के अंदर हमें अपने अर्धसैनिक बलों और इंटेलिजेंस को चुस्त-दुरुस्त रखने की अब ज्यादा जरूरत है. खास तौर पर, भारत में छुपे स्लीपर सेल्स को खोजकर उन्हें खत्म करने की सख्त जरूरत है. किसी भी देश की आंतरिक सुरक्षा जितनी मजबूत होगी, वह देश उतना ही सशक्त होगा. यह बात हमारी सरकारें और सेना बखूबी जानती हैं. भारत ने सदैव अपनी आंतरिक सुरक्षा को ज्यादा महत्त्व दिया है. आतंक का सामना हमने हमेशा हिम्मत से किया है. जब-जब बात देश की सुरक्षा पर आती है, तब-तब हमारी सेना ने दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दिया है.

जहां तक बात संबंधों की है, तो पुलवामा आतंकी हमले से भारत-पाकिस्तान संबंध पटरी से उतर गये हैं. भारत पहले ही पाकिस्तान द्वारा वहां की आतंकी संस्था जैश-ए-मोहम्मद को न रोकने का सबूत दे चुका है. लेकिन पाकिस्तान इस बात को मान ही नहीं रहा है. इसलिए भारत के पास यही उपाय है कि एक बेहतरीन सैन्य रणनीति के साथ पाकिस्तान की हर क्रिया की प्रतिक्रिया दे. हमें पूरा यकीन है कि भारतीय सेना हमारे यकीन पर खरा उतरेगी.

बोधि वृक्ष

मन का लोभ

मनुष्य जिस तरह के सामाजिक परिवेश में रहता है, उसमें उसे लोभ हो जाना स्वभाविक भी है. यदि हम अपने आसपास लोगों को गाड़ी से आता-जाता देखते हैं, तो हमारे मन में भी गाड़ी का लालच उत्पन्न हो जाता है. कहा गया है कि यदि हम अपने मन को साध लें, तो सब कुछ ठीक हो जाता है. मनुष्य को भौतिक वस्तुओं के प्रति मोह होने पर वह और अधिक प्राप्त करने की लालसा करने लगता है. लोभी और लालची व्यक्ति नैतिक-अनैतिक कुछ भी नहीं देखता. वह किसी भी तरह से अधिक-से-अधिक भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने लगता है. लोभ ऐसी तृष्णा है, जिससे मनुष्य का संतोष खत्म हो जाता है, जबकि संतोष मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है. लोभ-लालच में जीवन का आनंद नहीं, बल्कि संतोषी जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है. लोभी व्यक्ति कितना ही प्राप्त क्यों न कर ले, उसके भीतर और ज्यादा की चाह बनी रहती है. इस चक्कर में वह उन वस्तुओं का आनंद भी नहीं ले पाता, जो उसके पास मौजूद है. इसके विपरीत संतोषी व्यक्ति को जो मिल जाता है, वह उसी में संतोष कर लेता है और प्राप्त वस्तु का भरपूर आनंद लेता है. लोभ से बचने की सीख देते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि पराये की घी लगी रोटी को देखकर किसी भी मनुष्य की जीभ नहीं ललचानी चाहिए, बल्कि उसे अपने पास की रूखी-सूखी रोटी खाकर ठंडा पानी पीना चाहिए. यह मनुष्य नहीं, बल्कि उसका मन ही है, जो गाड़ी इत्यादि की कामना करता रहता है. बस, मनुष्य को अपने मन को मनाने की देर है. मनुष्य यह कहकर अपने मन को मना सकता है कि ऐ मन, मैं पैदल चलता हूं, इसलिए मैं गाड़ी में चलनेवाले उस व्यक्ति से ज्यादा स्वस्थ व फुर्तीला रहता हूं. जब मैं सार्वजनिक परिवहन से यात्रा करता हूं, तो रोज नये-नये लोगों को देखता हूं और उनसे कुछ-न-कुछ जरूर सीखता हूं. मनुष्य को कभी भौतिक वस्तुओं का गुलाम नहीं बनना चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का मन ही उससे लोभ और लालच करवाता है.

आचार्य सुदर्शन

आपके पत्र

उकसावे की कार्रवाई से बचे पाकिस्तान

क्या 1965 और 1971 दोहराये जाने के दहलीज तक हम पहुंच चुके हैं? क्या दोनों मुल्कों में तल्खी इतनी बढ़ गयी है कि युद्ध से ही इसका फैसला करना पड़ेगा? क्या पाकिस्तान को कश्मीर से इतना प्यार हो गया है की इसके एवज में शेष चारों प्रांतों के नागरिकों की बलि चढ़ाने को तैयार है? क्या पाकिस्तान को अपने खस्ताहाल आर्थिक स्थिति पर थोड़ा भी मलाल नहीं है? क्या पाकिस्तानी सेना को मसूद अजहर, हाफिज सईद एवं सैयद सलाहुद्दीन का शेष विश्व से ज्यादा जरूरत है? आज पाकिस्तान को किसी भी तरह के उकसावे की कार्रवाई से बचना चाहिए, क्योंकि भारत एक बड़ा मुल्क है, वह युद्ध को बर्दाश्त कर लेगा. मगर पाकिस्तान नहीं. युद्ध एवं गृह युद्ध का क्या नतीजा होता है, आज यमन, सीरिया, सूडान, सोमालिया, अफगानिस्तान आदि देशों के भयावह हालात से देखा जा सकता है.

जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

भारत ने दिया दुनिया को संदेश

बालाकोट में जैश के जिस आतंकी अड्डे को मटियामेट किया गया, वैसे तमाम अड्डे पाकिस्तानी सेना के संरक्षण और समर्थन से ही चलते हैं. अभी तक पाकिस्तान ऐसे अड्डों को खत्म करने का दिखावा करने के साथ यह बहाना भी बनाता रहा है कि वे खुद ही आतंक के शिकार हैं. यह झूठ न जाने कितनी बार बेनकाब हो चुका है, किंतु पाकिस्तान बेशर्मी से बाज नहीं आता. बालाकोट में सफल हवाई हमले को अंजाम देने के बाद भारत दुनिया को यह संदेश देने में भी कामयाब रहा कि उसने पाकिस्तान को निशाना बनाने के बजाय उसके यहां कायम आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया. चूंकि पाकिस्तान के लिए दुनिया को यह समझाना मुश्किल होगा कि उसके यहां आतंकी अड्डे नहीं चल रहे थे, इसलिए उसके लिए कोई कार्रवाई कर पाना भी कठिन होगा.

डॉ हेमंत कुमार, गोराडीह, भागलपुर

गर्व है भारतीय वायु सेना पर

सर्जिकल स्ट्राइक के बाद अब एयर स्ट्राइक कर भारतीय वायु सेना के वीर जांबाजों ने यह बात साबित कर दिया कि 'यह नया हिंदुस्तान है, छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं'. मंगलवार को भारतीय वायु सेना ने मिराज 2000 विमानों के साथ पाकिस्तान स्थित बालाकोट व अन्य इलाकों में घुसकर आतंकियों के अड्डों को नेस्तनाबूद करने में बड़ी सफलता पायी है. पूरे 1000 किलो लेजर गाइडेड बम के साथ मिशन को पूरा किया गया. इसमें जैश-ए-मोहम्मद के साथ-साथ अन्य आतंकी संगठनों के ठिकानों को भी ध्वस्त कर दिया गया. यह बात अलग है कि पाक इससे साफ इंकार कर रहा है कि इससे उन्हें कोई भी क्षति हुई हो क्योंकि सच को नकारना तो पाकिस्तान की अब आदत बन चुकी है. हालांकि सीमा पार जाकर पाक पर हमला करना कोई आसान काम नहीं था. आज हम सब भारतीयों को गर्व है अपने भारतीय सेना पर जिन्होंने पुलवामा अटैक का बदला लिया.

शुभम गुप्ता, नावागढ़, धनबाद

एक्सपर्ट कमेंट

हमने सबक सिखा दिया

डॉ जे जगन्नाथन
दक्षिण एशिया व न्यूक्लियर मामलों के जानकार
delhi@prabhatkhabar.in

भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के मद्देनजर दो-तीन मुख्य बातें हैं, जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए. एयर स्ट्राइक का कदम जो हमने पुलवामा आतंकी हमले के बाद उठाया था, उसने पाकिस्तान को बहुत नुकसान पहुंचाया. पाकिस्तान में मौजूद आतंकी कैंपों को हमने उड़ा दिया और यह संदेश हमने दिया कि आतंकियों को समर्थन देने की नीति नहीं चलनेवाली है. हमने बता दिया कि अगर आप आतंकियों को समर्थन देते रहेंगे तो हम ऐसी कार्रवाइयों को अंजाम देंगे. पाकिस्तान में जितने आतंकी कैंप चलते हैं, उनको वहां की सेना सहयोग देती है.

पाकिस्तान के अंदर तक घुसकर हमारी वायु सेना ने आखिरी बार साल 1971 के युद्ध में कार्रवाई की थी. अब इतने सालों बाद हम पाकिस्तान के इतने अंदर घुसकर कार्रवाई करके आये हैं और बड़ी बात यह रही कि हमने आतंकी कैंप भी तबाह किये और बिना किसी मानवीय नुकसान के लौटकर वापस आये. इससे स्पष्ट संदेश गया कि हम सक्षम हैं कि जब चाहें, तब ऐसी कार्रवाई को अंजाम दे सकते हैं. हमारी सरकार ने साफ कहा था कि वह चुप नहीं बैठेगी और उसने सफलतापूर्वक दिखा भी दिया.

पाकिस्तान ने जो प्रतिक्रिया दी है, वह अपेक्षित थी. हमारी कार्रवाई के बाद पाकिस्तानी सेना बहुत अपमानित हुई थी और स्थानीय जनता के निशाने पर आ गयी थी. लोग सवाल कर रहे थे कि भारत ने पाकिस्तान में घुसकर ऐसी कार्रवाई की और पाकिस्तानी सेना क्या कर रही थी. इसलिए पाकिस्तानी सेना पर दबाव था कि जवाबी कार्रवाई में उन्हें भी कुछ-न-कुछ करना पड़ेगा. लेकिन भारत की कार्रवाई पुलवामा हमले के बाद हुई थी. भारत ही नहीं, पूरे वैश्विक समुदाय ने पुलवामा हमले की निंदा की थी और यह कहा गया था कि पाकिस्तान आतंकी संगठनों को सहयोग करना बंद करे. लेकिन, पाकिस्तान ने केवल अवाम के गुस्से और कुछ करने के दबाव में हम पर हमला किया है. हालांकि, भारतीय सेना ने तत्काल अच्छा जवाब दिया. भारतीय सेना की अपनी तैयारी बहुत मजबूत है.

हमारे विदेश सचिव ने कहा था कि पाकिस्तान को जो सबक सिखाना जरूरी था, वह हमने सिखा दिया और अगर पाकिस्तान आतंकियों को समर्थन देना बंद नहीं करता, तो हम ऐसी कार्रवाई करते रहेंगे. पाकिस्तान अगर युद्ध की स्थितियां पैदा करता है, तो हम मुंहतोड़ जवाब देने को तैयार हैं. अच्छी बात यह भी है कि दुनिया की जितनी महाशक्तियां हैं, चाहें वह अमेरिका हो, रूस हो, सभी भारत के सपोर्ट में हैं. कोई भी देश ऐसा नहीं है, जो पाकिस्तान को समर्थन दे रहा हो. वैश्विक समुदाय के सामने आतंकवाद सबसे बड़ा मुद्दा है. पाकिस्तान की सारी कलई अगले कुछ दिनों में खुलकर बाहर आ जायेगी. पाकिस्तान अगर वर्तमान नीति पर चलता रहता है और हमले करने की कोशिश करता, तो भारत की सेना बड़े पैमाने पर पाकिस्तान पर कार्रवाई करेगी और विजयी होगी.

देश दुनिया से

न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी की ओर सऊदी का रुख

अमेरिकी नेता यह जानना चाहते हैं कि क्या अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप सऊदी अरब को संवेदनशील न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी बेचना चाह रहे हैं? यह बात खुद इस मामले की जांच कर रही अमेरिकी संसद की हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव कमेटी ने कही है. दरअसल, कमेटी के सदस्यों को इस बात का डर है कि सऊदी सरकार अमेरिकी तकनीक के जरिये परमाणु बम बना सकती है और इसकी वजह से रियाद और उसके धुर प्रतिद्वंद्वी तेहरान के बीच तनाव बढ़ जायेगा. सिविल न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी, सैन्य तकनीक दोनों एक-दूसरे से इतनी गहराई से जुड़े हुए हैं कि उन्हें बमुश्किल ही अलग किया जा सकता है. न्यूक्लियर तकनीक के सिविल इस्तेमाल से ज्ञान, मैटीरियल और तकनीक हासिल की जा सकती है, जिसे सैन्य नाभिकीय कार्यक्रम के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है. हालांकि, जर्मन काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस के सऊदी अरब एक्सपर्ट सेबास्टियान सोंज मानते हैं कि सऊदी अरब प्राथमिक रूप से नाभिकीय ऊर्जा का सैन्य इस्तेमाल नहीं करना चाहता है. गौरतलब है कि सऊदी अरब तेल पर अपनी आर्थिक निर्भरता को कम करना चाहता है. उसका 80 फीसदी राजस्व पेट्रोलियम से ही आता है.

कार्टून कोना

साभार : कार्टून मूवमेंट डाट कॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो . लिपि रोमन भी हो सकती है